पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

# आश्वस्त

वर्ष 18, अंक 150

मार्च 2016

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

है। मात्र मदर्स–डे मनाने से एक दिन अच्छा बोलने भर से माता–पिता को संतुष्ट करने की बात करना हास्यास्पद लगती है। सच्ची सेवा है मधुर वाणी, सम्मान, आज्ञाकारी बनना, पहले माता–पिता को भोजन कराकर बाद में भोजन करना एक गुणवान पुत्र की पहचान है। माता–पिता कभी भी श्राप नहीं देते क्योंकि उनके पास सिवाय आशीर्वाद के कुछ होता ही नहीं है। इसके बाद भी कन्याओं को अभिशाप समझने की हम भूल करते आ रहे हैं। उन्हें सम्मान दें आज की बालिका कल का भविष्य है। इसी की उंगली पकड़कर भावी संतान देश का गौरव बढ़ाती आयी है। माँ का सम्मान करें हम सब माँ की बगिया के फूल है मुस्कुराना हमारा हक़ है।

माता–पिता की सेवा सर्वोपरि सेवा है। यह हमारे ध्यान में हर वक्त समाया ही रहे।

**23, अर्चना परिसर, उज्जैन**
**मोबा. 9926631925**

# कविताएँ

## विश्व जननी

✍ संध्या दत्ता कदम

वेद, पुराण, बाइबल, कुरआन।
में दिया है मुझे बड़ा सम्मान।
हर धर्म ग्रन्थ में मैंने मुझे पाया।
पूजनीय बताया, तुम्हारा स्वार्थ दिखाया।
पर मुझ पर मुझे गर्व है।
नारी हूँ, नरक को स्वर्ग बनाना है।
सारे ब्रह्माण्ड को मुझे ही चलाना है।
आदम को हवा ने जगाया।
यशोदा ने कृष्ण को मक्खन खिलाया।
कौशल्या ने राम को दूध पिलाया।
गौतमी ने सिद्धार्थ को बुद्ध बनाया।
मरियम ने जिजस को शांति दूत बनाया।
सागर के पेट से मोती निकलते हैं।
मेरे गर्भ से विश्व ज्योति निकलती है।
बसवेश्वर, विवेकानन्द मेरे ही तो लाल हैं।
भगतसिंह, अब्दुल कलाम विश्व में विशाल हैं।
पुरुषों की जननी तेजस्विनी मैं हूँ।
वीरों की जननी जीजाऊ भी मैं हूँ।
मैंने तुम पर सब कुछ लुटाया।
तुमने मुझे देवी बनाकर मंदिर में बिठाया।
लक्ष्मी बनाया, दिल बहलाया।
धन, दौलत अपने हाथ लगा लिया।
सरस्वती बनाया, संगीत गवाया।
नर्तकी बनाकर मुझे ही नचाया।
नाच–नाचकर दिल बहलाया।
तुम्हारी बुरी नज़र मुझे धोखा ही देती आई।
स्वार्थी मानव संभाल अब तो।
मैं हूँ तो सारा जग शांत, प्रशांत है।
दुर्गा चण्डी, काली न बनाओ मुझे।
बस् विश्व जननी बनकर रहने दो मुझे।

**सदाशिवगढ़, कारवार–58135**
**जिला–उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक**
**मो. 0944879676**

## माँ गर्भ में मत मार

✍ बी.एल. परमा

माँ मेरे मन की सुन ले एक बार।
मुझे जन्म दे दे, गर्भ में मत मार।
मैं तेरी परछाई साथ रहूं साकार।
मत ठुकराए मैया कर मुझसे प्यार।
माँ जग देखन दे, बस एक बार।
मुझे जन्म दे दे, गर्भ में मत मार।